श्रीः ।

अथ अर्घप्रकाशज्योतिष ।

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीमद्देवीपदद्वंद्वंप्रत्यू-हव्यूहनाशनम्॥तन्नमामिमतिर्यस्य वितरत्यु-त्तमांमतिम्॥१॥ अथातःसंप्रवक्ष्यामिसारंचा-र्घप्रकाशकम्। मथितंसर्वग्रंथानांदधिमध्येघृतं यथा॥ २॥तिथिवारंप्रवक्ष्यामिऋक्षाणांसप्तविं-शतिम्॥ अन्यान्क्रूरान्ग्रहान्वक्ष्येयैर्भावोल-क्ष्यतेध्रुवं॥ ३॥

अर्थ—शोभायुक्त श्रीदेवीके चरणोंको विघ्नोंके समूहोंका नाश करनेवालोंको मै वारंवार नमस्कार करताहूं क्यौं कि जिस देवीके अर्थ नमस्कार करनेसै उत्तम बुद्धि होती है॥ १॥ अब जैसे दहीमाहसे साररूप घृत मथा जाताहै तैसे सब ग्रंथोंमाहसे मंथाहुआ सार रूप अर्घप्रकाशकनामवाले ग्रंथको कहैंगे॥२॥ इस ग्रंथमे

तिथिवार सत्ताईश नक्षत्र इनका शुभाशुभ फल और जिन ग्रहोंसे महिंगा सस्ता भाव मालूम होसक्ताहै उनका फल कहैंगे ॥ ३ ॥

अथाश्विन्यादिनक्षत्रगतशनिफलमाह—

अश्विन्यांचगतःसौरिस्तिलतैलंचपित्तलम् ।
महर्घं मासमेकंचपुनः शस्तोऽपिजायते ॥ ४ ॥

अर्थ—अश्विनी आदि नक्षत्रपै प्राप्तहुये शनैश्चरका फल—जब अश्विनीनक्षत्रपै शनैश्चर प्राप्त होवे तब तिल तैल पीतल ये एक महीनातक महिंगे होवे फिर शस्ते होजावे ॥ ४ ॥

भरण्यांचैवऋक्षेतुरविपुत्रोहिसंस्थितः ।
भ्रातृणांप्राग्भवेद्युद्धंराज्ञांचैवमहद्भयम् ॥ ५ ॥

अर्थ—भरणीनक्षत्रपै शनैश्चर होवै तब पूर्व दिशामे आपसमें भाइयोंका युद्ध होवे और राजाओंको अत्यंत भय होवे ॥ ५ ॥

कृत्तिकांचगतःसौरिरशेषाणिधनानिच ।
सुभिक्षंभवतेतत्र काष्ठेलाभश्चतुर्गुणः ॥ ६ ॥

अर्थ—जब कृत्तिका नक्षत्रपै शनैश्चर होवे तब रुप-य्या सोना आदि सब धन महिंगे होवे और अन्न सस्ता होवे संवत् होवे और काष्ठके खरीदनेमें चौगुना लाभ होवे ॥ ६ ॥

अश्विन्यांचभरण्यांचकृत्तिकायांतथैवच ।
भूमिपुत्रोयदाचासीत्सौख्यंचैवविनिर्दिशेत् ॥७॥

अर्थ—अश्विनी भरणी कृत्तिका इननक्षत्रोंपे मंगल होवे तब संसारमें सबके सुख आनंद होवे ॥ ७ ॥

रोहिणीमृगशीर्षेचसूर्यपुत्रोयदाभवेत् ।
कुंजराः प्रलयंयांतिसर्ववस्त्रमहर्घता ॥ ८ ॥

अर्थ—रोहिणी मृगशिर इनपै शनैश्चर होवे तब ह-स्तियोंका नाश होताहै और सब प्रकारके वस्त्र महिंगे होते है ॥ ८ ॥

आर्द्रायांचयदासौरिःसर्वधान्यस्यसंग्रहः ।
द्वितीयेतृतीयेमासेद्विगुणंलाभमादिशेत् ॥ ९ ॥

अर्थ—आर्द्रानक्षत्रपे शनि होवे तब सबधान्योंका संग्रह करना चाहिये धान्यसंग्रह करनेवालेको दूसरे तीसरे महीनेमें दूना लाभ होता है ॥ ९ ॥

आदित्यश्चतथाभौमआर्द्रायांचगतावुभौ ।
महर्घमेकमासेनपुनःशस्तोऽभिजायते ॥ १० ॥

अर्थ—सूर्य मंगल ये दोनो आर्द्रा नक्षत्रपे होवे तब एक महीनातक महिंगा भाव रहै फिर अन्न आदि शस्ते हो जावे ॥ १० ॥

पुष्येपुनर्वसौचैवयदिसौरिः प्रजायते ।
सस्येसुखंचदुःखंचतेनकालःप्रवर्तते ॥ ११ ॥

अर्थ—पुष्यनक्षत्रपे शनि होवे तब खेतियोंमें अन्न वृद्धि होके संसारको सुख उत्पन्न होवे और पुनर्वसुपे आवे तब संसारको दुःख होवे काल परे ॥ ११ ॥

आश्लेषायांयदासौरिस्तदावृष्टिर्निवार्यते ।
धनुषःसारखड्गस्यनूनंचैवमहर्घता ॥ १२ ॥

अर्थ—जब आश्लेषा नक्षत्रपै शनि होवे तब वर्षा नहींहोवे और धनुष उत्तम खड्ग ये महिंगे होवे अर्थात् युद्धहोवे १२

मघायांचयदासौरिःसभयंदीयते तदा ।
कुंजरंहयवाणिज्यंलाभंचैवविनिर्दिशेत् ॥ १३ ॥

अर्थ—मघा नक्षत्रपै शनि होवे तब संसारमें भय होवे और हत्ती घोडे इनका व्यापार करनेमें चौगुना लाभ होवे ॥ १३ ॥

आदित्यादिग्रहाःपंचसौरिसंगेयदास्थिताः ।
सर्वधान्यंमहर्घंचनात्रकार्याविचारणा ॥ १४ ॥

अर्थ—सूर्यसे आदिले पांच ग्रह सूर्य चंद्रमा मंगल बुध बृहस्पति ये शनैश्चरके संग होवे तब सब धान्य महिंगे होवे इस्में संदेह नहीं ॥ १४ ॥

यदामार्तण्डतनयःपूर्वाफाल्गुनिसंस्थितः ।

चिंतावस्थाद्विजाःसर्वेपृथिव्यांदारुणंभयं ॥१५॥

अर्थ—जब शनैश्चर पूर्वा फाल्गुनीपै होवे तब सब ब्राह्मण चिंतासे युक्त होवे और पृथ्वीपे दारुण भय होवे ॥ १५ ॥

हस्तेजीवस्तथाराहुःशनिर्वापिभवेद्यदा ।
नृपश्चदुःखितोऽनाथोजायतेनात्रसंशयः ॥१६॥

अर्थ—हस्तनक्षत्रपै बृहस्पति राहु शनैश्चर ये ग्रह होवै तब राजाको पीडा होवे दुःख होवे गरीब होवे इस्में संदेह नहीं ॥ १६ ॥

चित्रायांचयदासौरिःपश्यतांचयदा भवेत् ।
महर्घंभवतेनित्यंलाभश्चैवचतुर्गुणः ॥ १७ ॥

अर्थ—जब चित्रानक्षत्रपै शनि होवे और शनी दिखता हो अस्त नहुआहो तो अन्नआदि सब वस्तु महिंगे होवे तिनमें चौगुना लाभ होवे ॥ १७ ॥

स्वात्यांविशाखाऋक्षेचयदासौरिःप्रगच्छति ।

चलंतितत्रभूपालानास्तिकिंचिद्विचारणा॥ १८॥

अर्थ—स्वाती विशाखा इन नक्षत्रोंपै शनि आवे तब राजाओंको दुःख होवे इसमें कछु विचार नहीं करना १८

स्वात्यांसौरिर्यदाभौमोरेवतींचगतोरविः ।
चालितास्तत्रभूपालानात्रकार्याविचारणा॥१९॥

अर्थ—स्वाती नक्षत्रपै शनि और मंगल होवे, सूर्य रेवती नक्षत्रपै होवे तब राजे चलायमान होवे इसमें कछु विचार नहीं करना ॥ १९ ॥

अनुराधांगतःसौरिर्ज्येष्ठायांपरिवर्तते ।
पश्चिमेदारुणोघोरःसंहारस्तत्रजायते ॥ २० ॥

अर्थ—अनुराधानक्षत्रपै वा ज्येष्ठानक्षत्रपै शनि होवे तब पश्चिमदिशामे दारुण घोर संहार होवे ॥ २० ॥

मूलेसौरिर्बुधः स्वातावार्द्रायांचैवसंस्थितः ।
संग्रहेसर्वधान्यानामग्रेलाभश्चदीयते ॥ २१ ॥

अर्थ—मूलनक्षत्रपै शनि होवे और स्वातिपै तथा

आर्द्रापै बुध होवे तब सब धान्योंका संग्रह करना चाहिये आगे चौगुना लाभ होताहै ॥ २१ ॥

यदामार्तण्डतनयःपूर्वाषाढेऽपिजायते ।
लोकानांचैवसर्वेषांकाष्ठेलाभश्चतुर्गुणः ॥ २२ ॥

अर्थ—जब पूर्वाषाढापै शनि होवै तब सब लोकोंको काष्ठके खरीदनेमें चौगुना लाभ होताहै ॥ २२ ॥

उत्तराषाढकेसौरिःसप्तमासेहिभास्करः ।
पानीयस्यलयंकुर्याद्वार्हीनाचमहीभवेत् ॥ २३ ॥

अर्थ—जब उत्तराषाढापैं शनि होवै तब सात महिनोतक सूर्य जलका नाश कर देवे और पृथ्वी वर्षाके जलसे रहित होजावे ॥ २३ ॥

यदाश्रवणऋक्षेतुकोपिक्रूरोभविष्यति ।
तत्रचान्नमहर्घंचगोधूमस्यविशेषतः ॥ २४ ॥

अर्थ—जब श्रवण नक्षत्रपै कोईभी क्रूर ग्रह आजावे तब अन्न महिंगे होवे और गेहूं विशेष महिंगे होवे॥२४॥

यदाऋक्षधनिष्ठायांसूर्यपुत्रोपिजायते ।
सर्वधान्यमहर्घंचवृष्टिस्तत्रभविष्यति ॥ २५ ॥

अर्थ—धनिष्ठा नक्षत्रपै शनि होवे तब सब धान्य महिंगे होवे और वर्षाभी होवे ॥ २५ ॥

मंगलःसौरिशुक्रौचधनिष्ठायांस्थितायदि ।
गर्जिताश्चनवर्षन्तितोयबिंदुंपयोधराः ॥ २६ ॥

अर्थ—मंगल शनि शुक्र ये धनिष्ठा नक्षत्रपै होवे तब गर्जते हुयेभी मेघ बुंद मात्र जलको नहीं वर्षे ॥ २६ ॥

शतभिषांचयदाजीवश्चित्रायांचभवेत्कुजः ।
महर्घंचान्नगोधूमाःपूर्वादीनांचतुर्दिशं ॥ २७ ॥

अर्थ—शतभिषापै बृहस्पति होवै और चित्रापै मंगल होवे तब पूर्व आदि चारों दिशाओंमें गेहूं महिंगे होवे २७

पूर्वाभाद्रपदाऋक्षेयदासौरिश्चसंस्थितः ।
मेघश्चवर्षतेतत्रलोकानांचहितायवै ॥ २८ ॥

अर्थ—पूर्वाभाद्रपदानक्षत्रपै शनि होवे तब संसारके हितके वास्ते मेघ वर्षे ॥ २८ ॥

उत्तराभाद्रपदाऋक्षेरेवत्यांचतथैवच ।
राज्ञोभयंमृतानांचलोकानांव्याधिपीडनं ॥२९॥

अर्थ—उत्तराभाद्रपदा तथा रेवतीपै शनि होवे तब मनुष्योंको राजासे भय होवे और लोगोंमे बीमारी होवे ॥ २९ ॥ इति शनिचारः

अथमेषराशिगतग्रहफलम्

अन्यंचाहंप्रवक्ष्यामिग्रहचारसमुच्चयम् ।
क्रूरेषुसौम्यकर्मेषुराशिराशिफलंतदा ॥ १ ॥

अर्थ—अब मेषराशिपै आनेवाले ग्रहोंका फल कहते हैं सब ग्रह चारके अन्य समूहकों कहतेहै और जो क्रूर ग्रह है उनका तथा सौम्य कर्मवाले ग्रहोंके फलकों कहैंगे ॥ १ ॥

यदाभानुःस्थितोमेषेफलानितुलभादिकम् ।
इक्ष्वादितिलतैलादितदाचैवमहर्घता ॥ २ ॥

अर्थ—जब मेषराशिपै सूर्य होवे तब फल और रुई ईख तिल तेल इत्यादिक सब वस्तु महिंगी होवें ॥ २ ॥

यदाभौमभृगूचैवशनिक्षेत्रेभविष्यतः ॥
निशापतिःस्थितस्तत्रनकिंचिच्चशुभंभवेत्॥३॥

अर्थ—जब मंगल शुक्र ये शनिके क्षेत्रमें होवे तहां चंद्रमाभी आजावे तब संसारमें सब अशुभ फल होवें ३

भूमिपुत्रोयदामेषेसुभिक्षंसर्वधान्यकम्।
प्रवालानिमहर्घाणिक्रोधवांस्तुभवेन्नृपः ॥ ४ ॥

अर्थ—जब मंगल मेषका होवे तब सब धान्य शस्ते होवे और मुंगे महिंगे होवे राजाओंमें क्रोध उत्पन्न होवे४

बुधोवृश्चिकमेषेचमहर्घंचचतुष्पदम्।
सुवर्णसमतांयातिनात्रकार्याविचारणा ॥ ५ ॥

अर्थ—वृश्चिक और मेषराशिपे बुध होवे तब चोपाये पशु महिंगे होवे और सोनाका समान भान रहे इसमें संदेह नहीं ॥ ५ ॥

यदासुरगुरुर्मेषेसुखंसर्वजनेषुच।
सुभिक्षंक्षेममारोग्यंसुखिनीमेदिनीभवेत् ॥ ६ ॥

अर्थ—जब बृहस्पति मेषका होवै तब सब मनुष्योंमें सुख रहै और सुभिक्ष होवे क्षेम कुशल होवे पृथ्वीपै सुखकी वृद्धि होवे ॥ ६ ॥

दैत्यगुरुर्यदामेषेसर्वधान्यमहर्घता ।
महिषीपशुपीडाचमेघवर्षाभविष्यति ॥ ७ ॥

अर्थ—जब शुक्र मेषका होवे तब महिषी आदि पशुओंको पीडा होवे और सब धान्य महिंगे होवे पीछे वर्षाभी होवे ॥ ७ ॥

यदासौरिर्भवेन्मेषेकांचनंरुक्मताम्रकम् ।
मौक्तिकंपद्मरागंचमहर्घंतुभवेत्तदा ॥ ८ ॥

अर्थ—जब शनैश्चर मेषका होवे तब सोना चांदी तांबा ये महिंगे होते है और मोती पुखराज ये रतनभी महिंगे होतेहै ॥ ८ ॥

राहुश्चक्रूरसंगेषुयदामेषेभविष्यति ।
दुर्भिक्षंभवतेतत्रनात्रकार्याविचारणा ॥ ९ ॥

इतिमेषराशिग्रहचारः